bdkbZ 23 lcl s lLrk xk'r ¼vlxj otkgr½ % okpu vkj fo'ys"k.k

bdkbZ dh :ijs[kk

23.0 उद्देश्य
23.1 प्रस्तावना
23.2 नुक्कड़ नाटक
23.3 नुक्कड़ नाटक का वाचन : सबसे सस्ता गोश्त
23.4 नुक्कड़ नाटक का सार
23.5 कथावस्तु
23.6 पात्रों का चरित्र-चित्रण
23.7 परिवेश
23.8 संरचना-शिल्प
23.9 अभिनेयता
23.10 मूल्यांकन
23.11 सारांश
23.12 शब्दावली
23.13 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

23-0 mís';

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप बता सकेंगे कि;

- नुक्कड़ नाटक क्या होता है;
- यह जनजीवन के बीच कैसा रिश्ता बनाता है;
- किस तरह यह जागरण सुधार की चेतना जगाता है;
- 'सबसे सस्ता गोश्त' नुक्कड़ नाटक की विशेषताओं को समझ सकेंगे; और
- नुक्कड़ नाटक के महत्त्वपूर्ण अंश की व्याख्या कर सकेंगे।

23-1 izLrkouk

इस खंड की पिछली इकाइयों में आपने 'कौमुद्री महोत्सव' तथा 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी का अध्ययन किया है और उनका विश्लेषण और मूल्यांकन भी किया है। इस इकाई में आप 'सबसे सस्ता गोश्त' नामक नुक्कड़ नाटक का अध्ययन करेंगे।

यह नुक्कड़ नाटक जाने-माने समकालीन नाटककार और कथाकार असग़र वजाहत का लिखा हुआ है। असगर वज़ाहत ने कहानी, नाटक और उपन्यास के अलावा टेलीविज़न और सिनेमा के लिए स्क्रिप्ट भी लिखे हैं। बँटवारे को आधार बनाकर लिखा गया नाटक 'जिन लाहौर नई देख्या' बहुत प्रसिद्ध हुआ। सुप्रसिद्ध नाट्य निर्देशक हबीब तनवीर के निर्देशन में 1989 में इसके पहली बार मंचन को बेहद सफलता और ख्याति मिली। बाद में, हबीब तनवीर ने उसे दुनिया के कई शहरों– करॉंची, लाहौर, सिडनी, न्यूयॉर्क, दुबई में भी प्रस्तुत किया।

सन् 1946 में फतेहपुर में जन्मे असगर वज़ाहत लेखक होने के साथ-साथ अध्यापक भी हैं। वह जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष भी रहे हैं।

आपके मन में सवाल उठ रहा होगा कि नुक्कड़ नाटक क्या है? यह अन्य नाटकों जैसा ही होता है या उनसे कुछ अलग? इसकी क्या विशेषता है? यह कैसा होगा? प्रस्तुत इकाई में आपको इसके विषय में जानकारी मिलेगी।

23-2 uDdM+ ukVd

नुक्कड़ नाटक अत्यंत ही अनौपचारिक नाट्य रूप है जिसके लिए किसी भी रंगशाला या प्रस्तुति मंच की जरूरत नहीं होती। न ही कोई मंच सज्जा या LVst ikiVh अपेक्षित होती है। इसको गली-मोहल्ले के किसी नुक्कड़ या अन्य खाली स्थल पर कहीं भी खेला जा सकता

है। पात्रों की विशेष वेशभूषा की भी कोई अपेक्षा नहीं होती। यह मुख्यतः अभिनय पर आधारित होता है जिसमें संवादों के अलावा गायन का भी भरपूर उपयोग किया जाता है।

नुक्कड़ नाटक का उद्देश्य किसी समसामायिक प्रश्न अथवा समस्या के प्रति लोगों में जागरूकता पैदा करना होता है इसलिए नाट्य प्रस्तुति के माध्यम से उनका ध्यान आकृष्ट करते हुए उन्हें सोचने को मजबूर किया जाता है ताकि वे सुधार या बदलाव की जरूरत महसूस करें और उसके लिए प्रयास करें। नुक्कड़ नाटक चूँकि किसी भी खुली जगह पर प्रस्तुत किया जाता है अतः दर्शकों को बैठकर देखने की कोई विशेष व्यवस्था नहीं होती। दर्शक वर्ग इसे अक्सर घेरा बनाकर खड़े होकर देखता है। ज़ाहिर है कि ऐसी स्थिति में कोई लम्बा नाटक प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। लोग चलते-फिरते इसे देखने खड़े हो जाते हैं। उनके बहुत देर तक रुकने की गुंजाइश नहीं होती। तमाशे की तरह नाटक देखते हुए वह किसी गम्भीर समस्या के प्रति जागरूक होते हैं और उसके सुधार अथवा बदलाव की भावना उनमें पैदा होती है। इस तरह नुक्कड़ नाटक समाज सुधार या जनजागरण का प्रभावी माध्यम बन सकता है।

इसके संवाद छोटे और प्रभावपूर्ण होते हैं। भाषा गंभीर चिन्तनपरक न होकर रवानीदार और अक्सर व्यंग्यात्मक होती है।

'सबसे सस्ता गोश्त' पढ़ते हुए आप नुक्कड़ नाटक की इन विशेषताओं पर गौर कीजिए।

इकाई के अगले भाग में आप नुक्कड़ नाटक का वाचन करेंगे। आप देखेगे कि यह पिछली इकाइयों में पढ़े एकांकियों से कोई खास अलग नहीं है। यह भी छोटा-सा नाटक है, संवादों में प्रस्तुत है फिर इसे नुक्कड़ नाटक क्यों कहा गया है? गौर करने पर आप पाएँगे कि अन्य नाटकों की तुलना में यह काफी अनौपचारिक नाटक है जिसकी प्रस्तुति के लिए रंगस्थल पर किसी विशेष तैयारी की जरूरत नहीं। इस नाटक में कोई मंच-सज्जा के निर्देश नहीं दिए गए हैं न ही कोई पात्र परिचय दिया गया है। नाटक के आरंभ में केवल इतना संकेत है कि मंच पर एक गायक आकर गाना शुरू करता है। पूरे नाटक में केवल अभिनेताओं के लिए अभिनय संकेत हैं। यह सादगी यहाँ इसलिए बरती गई है कि यह नाटक किसी नाट्य गृह या सभागार के विशेष मंच पर खेलने की बजाय गली-मोहल्ले के नुक्कड़, मैदान आदि कहीं भी खेल लेने के लिए लिखा गया है इसलिए इसमें मंच-सज्जा अथवा पात्रों की वेशभूषा आदि किसी भी औपचारिक तैयारी का सुझाव नहीं दिया गया। आपने भाँड़, स्वाँग आदि लोक नाटक देखे होंगे जिनमें एक-दो या ज्यादा से ज्यादा तीन व्यक्ति किसी गाँव-शहर की गली या खुले स्थान पर अपना अभिनय प्रस्तुत करते हैं। नुक्कड़ नाटक ऐसी लोक शैलियों का मौजूदा रूप है। इसमें वर्तमान समय की महत्त्वपूर्ण सामाजिक-राजनीतिक स्थितियों-समस्याओं को इस तरह उजागर किया जाता है कि देखने वालों का न केवल ध्यान उनपर जाए बल्कि वे उन्हें सुधारने की जरूरत भी महसूस करें। इस तरह नुक्कड़ नाटक यथार्थ को उसके नग्न रूप में सीधे-सीधे किंतु व्यंग्यात्मक ढंग से सामने लाता है। देखने वाले अपने आपको उस यथार्थ में साझीदार महसूस कर उठते हैं।

23-3 uqDdM+ ukVd dk okpu % lcls lLrk xks'r

¼epu LFky ij xk;d vkrk gS vkSj xkuk izkjEHk djrk gSA½

xk;d % हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई
नहीं है कोई भाई-भाई
करते हैं सब मिल के लड़ाई
मारा पीटा आग लगाई
जब देखो तब आफत आई
रोज लड़ाई, रोज लड़ाई
(स्वर बदल कर)
धरम के नाम पर बच्चों की टांगें चीर देते हैं।
धरम के नाम पर औरत की छाती काट देते हैं।
धरम के नाम पर जिंदा जलाते हैं ये लोगों को।
(गायक चला जाता है और मंचस्थल पर एक हिंदू नेता तथा एक मुसलमान नेता आते हैं।)
¼nksuks gkFk idM+ dj ukprs gq, xkrs gSa½

nkuk % नेता हैं हम जात के
हिन्दू हैं न मुस्लिम
अरे काम हमारा लूट के खाना
हिन्दू हैं न मुस्लिम
(नाचते-नाचते रुक जाते हैं।)

fgn urk % चुनाव सिर पर आ गये। काम कुछ हुआ नहीं। वोट लेना फिर पड़ेगा·· वैसे तो मेरे चुनाव क्षेत्र में हिंदुओं का बहुमत है··· पर सब मुझसे घृणा करते हैं।

efLye urk % मेरे चुनाव इलाके में मुसलमानों की तादाद ज्यादा है। पर वो सब मेरी शक्ल से नफरत करते हैं।

nkuk feydj % पर हम नेता हैं। हम नफरत को प्यार में बदलना जानते हैं·· हम उनसे कहेंगे····

efLye urk % fcjknjku bLyke हिन्दुओं ने तुम्हें बर्बाद कर दिया। तुम्हारे घर उजाड़ दिये। तुम्हें जिंदा जला दिया·· लेकिन घबराने की क्या बात है मैं तुम्हारे साथ हूँ··· मैं··

fgn urk % आर्यावर्त के सुपुत्रो! इन eyPN मुसलमानों ने भारत माता के टुकड़े कर डाले। इन्हें क्या अधिकार है यहां रहने का। इन्होंने तुम्हारी औरतों की इज्जत लूटी है। बच्चों के गले काटे हैं··· आओ हम मिल जुलकर आगे बढ़ें··· मैं तुम्हारे साथ हूँ, तुम्हारा सेवक··· हाथ जोड़ता है।

efLye urk % मैं लोगों का दिल जीत लूँगा। जब उन्हें कर्फ्यू पास दिलाऊंगा···

fgn urk % राहत सामग्री बाटूँगा।

efLye urk % जमानतें कराऊँगा।

fgn urk % मंदिर बनवाने के लिए चंदा जमा करूँगा।

efLye urk % मस्जिद की मरम्मत कराऊँगा।

fgn urk % हर-हर महादेव

efLye urk % अल्ला हो अकबर
(एक मुल्ला और एक पंडित भागते हुए मंच स्थल पर आते हैं और हिंदू नेता के चरणों में पंडित और मुसलमान नेता के चरणों में मुल्ला बैठ जाते हैं और दोनों उन दोनों के पैर पकड़ लेते हैं)

efLye urk % (मुल्लाजी से) मुल्लाजी क्यों उदास हो ?

eYyk % मस्जिद बनवाने के लिए चंदा कम जमा होता है·· मेरी lk[k fxj jgh है।

fgn urk % (पंडित से) क्या कष्ट है पंडित जी।

ifMr % दान दक्षिणा, पूजा पाठ, हवन आदि कोई नहीं कराता। बहुत विधर्म है।

fgn-efLye urk ,d lkFk % दोनों खड़े हो जाओ। जैसा कहा जाये करो··· ikpk mxfy;k ?kh e होगी, flj d<kb e gkxk, Vkx pYg e gkxh।
(मुल्ला-पंडित खड़े होकर ताली बजाते हैं और नाचने लगते हैं।)
मंच पर दो बदमाश आते हैं और आते ही ठहाके लगाते हैं।

cnek'k % पिटिर बोल कर ही काम नहीं चलेगा नेताओ·· देश के रक्षको··· आग तो हम ही लगायेंगे··· गोलियाँ तो हम ही चलायेंगे। बच्चों की गर्दन तो हम ही काटेंगे··· औरतों की इज्जत तो हम ही लूटेंगे। उनकी छातियाँ तो हम ही काटेंगे··· कभी वर्दी पहन कर कभी उतार कर हम ही आयेंगे··

fgn urk % आओ बहादुरो तुम तो मेरा nkfguk gkFk gk।

efLye urk % आओ बहादुरो re rk ejh vk[k gk।
(हाथ पकड़ कर गले लगा लेता हैं और गाना गाते हुए नाचते हैं।)

leg xku % सारे जहाँ से अच्छा
हिंदोस्तां हमारा
हम बुलबुलें हैं इसकी
ये गुलिसतां हमारा-हमारा

बिरादराने इस्लाम–मुसलमान भाइयों; मलेच्छ–विदेशी, अनार्य; साख गिर रही–(साख गिरना) (मु.) प्रतिष्ठा घटना; पाँचों उँगलियाँ घी में (मु.)–खूब फायदा होना; सिर कढ़ाई में होना (मु.)–मुसीबत में पड़ना; टाँगे चूल्हे में होना (मु.)–कठिन संकट में पड़ना; दाहिना हाथ होना (मु.)–प्रमुख शक्ति होना; तुम तो मेरी आँखें हो–पथ प्रदर्शक होना।

मजहब नहीं सिखाता
आपस में बैर रखना
हिंदी हैं हम, वतन है
हिन्दोस्तां हमारा।

(गाना खत्म करके बदमाश मंच स्थल के कोने पर रखी एक पोटली उठाकर क्रमशः हिंदू और मुसलमान नेताओं को देते हैं।

efLye urk % ¼eYyk th l½ मुल्ला जी इसे लेकर मस्जिद में डाल दो।
eYyk % क्या है इसमें···
efLye urk % क्या होगा? बचपन वाली बातें करते हो इसमें है सुअर का गोश्त।
(मुल्ला पोटली छोड़ देता है।)
fgnw urk % ¼ifMr l½ ये पोटली उठाओ··· इसमें है गाय का गोश्त।
(पंडित पोटली छोड़ देता है)
fgnw-efLye urk% अपनी-अपनी पोटलियाँ उठाओ··· हिम्मत से काम दिखाओ··· जाओ मंदिर में गाय और मस्जिद में सुअर पहुँचाओ।

¼epLFky l l c fudy tkr gA½

मंचस्थल पर दो पोटलियाँ आकर गिरती हैं और एक तरफ से हिन्दू तथा दूसरी तरफ से मुसलमान आते हैं।

fgnw % हर-हर महादेव।
eqlyeku % अल्ला हू अकबर।
fgnw % हम तुम्हारा [kwu ih tk;x।
eqlyeku % हम तुम्हें tgUuqe पहुँचा देंगे।
(दोनों गिरोह और पास आते हैं नारे और जोर से लगाते हैं और अपने-अपने हथियार सीधे कर लेते हैं। शोर बढ़ता है। अचानक एक आदमी दोनों गुटों के बीच में आ जाता है – चीख कर कहता है।)
vkneh % ठहरो, रुको··· बात सुनो··· मैं जानता हूँ तुम लोग न हिंदू हो न मुसलमान··· तुम लड़ने का फैसला करके ही घर से निकले हो··· लेकिन बताओ तो आखिर बात क्या है?
fgnw % मुसलमानों ने मंदिर में गाय का गोश्त फेंका है ये देखो।
eqlyeku % हिन्दुओं ने मस्जिद में सुअर का गोश्त फेंका है ये देखो। (आदमी झुककर दोनों पोटलियों को देखता है और फिर खड़ा होकर)
vkneh % भाइयों ये सुअर और गाय का गोश्त नहीं है।
HkhM+ % है है··· क्यों नहीं है···
vkneh % नहीं, नहीं दोस्तो मैंने दुनिया देखी है। क्या तुम समझते हो मैं गाय और सुअर के गोश्त को नहीं पहचानता··· देखो अगर ये सुअर का गोश्त होता तो इसमें चर्बी होती··· देखो चर्बी कहाँ है··· अगर ये गाय का गोश्त होता तो लाल होता··· रेशे··· होते··· इसमें रेशे कहाँ हैं··· नहीं नहीं ये गाय और सुअर का गोश्त तो हो ही नहीं सकता··· धोखा हुआ है तुम लोगों को।
HkhM+ % फिर ये किसका गोश्त है?
vkneh % सुनो··· ये आदमी का गोश्त है।
HkhM+ % आदमी का गोश्त है?
vkneh % ¼fo'okl l½ हाँ, आदमी का गोश्त··· ये रंग··· ये बे रेशे··· ये तो आदमी का गोश्त है मेरे भाई, आदमी का···
fgnw-efLye urk% नहीं नहीं··· तुम झूठ बोल रहे हो।
vkneh % रंग और रंगत देखो··· रेशे देखो··· ये आदमी के गोश्त के अलावा कुछ हो ही नहीं सकता।
dN vkokt % (ठंडेपन से) अच्छा, आदमी का गोश्त है।
,d vkokt % तब कोई बात नहीं।
nl jh vkokt % मंदिर अपवित्र नहीं हुआ।
rhl jh vkokt % मस्जिद ukikd नहीं हुई।

[2] खून पी जाना (मु.)–मार डालना; जहन्नुम–नरक; नापाक–अपवित्र।

pkFkh vkokt % चलो अच्छा ही हुआ।
ikpoh vkokt % धरम बच गया।
fgUnw usrk % चलो हिन्दुत्व के रक्षको, ये गाय का नहीं, आदमी का गोश्त है।
eqlyeku usrk % चलो इस्लाम के सिपाहियों, ये सुअर का नहीं आदमी का गोश्त है।
cnek'k % च : च : आदमी का गोश्त

(सब चले जाते हैं)

23-4 uqDdM+ ukVd dk lkj

पिछले भाग में आपने 'सबसे सस्ता गोश्त' नुक्कड़ नाटक पढ़ा। आपने देखा कि इस छोटे से नाटक के माध्यम से लेखक ने दिखाया है कि मौजूदा समाज किस तरह साम्प्रदायिक राजनीति का शिकार है। नेता बन बैठे लोग समाज में दंगे भड़काने के लिए किस-किस तरह की घटिया चालें चलते हैं और अपने को धर्मगुरु कहने वालों को वश में करके उनसे घृणित कार्य कराते हैं ताकि हिन्दू-मुसलमान एक-दूसरे के खिलाफ भड़क उठें। इतना ही नहीं वे लोग बदमाशों से मिलकर आगजनी, हत्याएँ, बलात्कार करते हैं और फिर लोगों की मुसीबत में मददगार बनने का ढोंग कर उनके वोट हासिल करना चाहते हैं। एकता का गीत गाते हैं किंतु लड़वाने की राजनीति करते हैं। दो पोटलियों में गोश्त लाकर के पंडित और मौलवी से ही मंदिर और मस्जिद में फिकवाते हैं। हिन्दू समझते हैं कि मंदिर में गाय का गोश्त मुसलमानों ने रखा है और मुसलमान समझते हैं कि मस्जिद में सुअर का गोश्त हिन्दुओं ने रखा है। दोनों के दल आपस में भिड़ जाने को तैयार हैं तभी मंच पर एक आदमी आकर दोनों के बीच खड़ा हो जाता है और कहता है कि वह जानता है कि वे लोग न हिंदू हैं न मुसलमान। वे तो लड़ने के लिए तैयार होकर निकले दो गिरोह हैं। वह दोनों गिरोहों के लोगों से पूछता है कि वे किस कारण इतने आक्रोश में हैं। हिन्दू कहते हैं कि मुसलमानों ने मंदिर में गाय का गोश्त फेंका और मुसलमान कहते हैं कि हिन्दुओं ने मस्जिद में सुअर का गोश्त फेंका है।

वह आदमी दोनों पोटलियाँ देख कर बताता है कि यह गाय और सुअर का गोश्त नहीं है और तुम सब धोखे में हो। जब लोग विश्वास नहीं करते तो वह समझाता है कि न तो इस गोश्त में चर्बी है और न ही यह लाल रंग का और रेशेदार है फिर यह कैसे सुअर और गाय का गोश्त हो सकता है। लोग पूछते हैं कि यह किसका गोश्त है तो वह बतलाता है कि यह आदमी का गोश्त है। इसका रंग और रंगत बताती है कि यह आदमी का ही गोश्त हो सकता है और किसी का नहीं। हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही नेता यह सिद्ध करने का प्रयास करते हैं कि वह आदमी झूठ बोल रहा है किंतु वह आदमी पूरी तरह आश्वस्त है। तब भीड़ का आक्रोश ठंडा पड़ने लगता है। लोग इस बात की तसल्ली कर लेते हैं कि मंदिर अपवित्र नहीं हुआ मस्जिद नापाक नहीं हुई। नेता लोग भी अपने गिरोहों को यह कह कर वापस ले जाते हैं कि यह गाय का या सुअर का गोश्त नहीं है। किंतु विडम्बना यह है कि सभी लोग इतने संवेदन-शून्य हो चुके हैं कि इस बात का किसी पर कोई असर नहीं पड़ता कि आदमी का गोश्त यहाँ लाकर फेंका गया है राजनीतिक फायदे के लिए, दंगे करवाने के लिए। आखिर में बदमाश का वाक्य *p% p% vkneh dk xks'r* इस विडम्बनापूर्ण स्थिति को और ज्यादा गहरा और तीखा बना देता है।

आगे हम नुक्कड़ नाट्य रूप की दृष्टि से इस नाटक पर विचार करेंगे।

23-5 dFkkoLrq

'सबसे सस्ता गोश्त' की कथावस्तु हमारे आस-पास के जीवन से ली गई है। साम्प्रदायिक दंगों के विषय से हम सब भलीभाँति परिचित हैं। अखबार, टेलीविज़न, रेडियो पर इनके बारे में अक्सर पढ़ते-देखते-सुनते हैं। यह दंगे क्यों और कैसे होते हैं? इस प्रसंग को विषय बनाते हुए लेखक ने इस नुक्कड़ नाटक की कथावस्तु का विकास किया है। नाटक की कथावस्तु इस तथ्य पर फोकस करती है कि साम्प्रदायिक दंगे अक्सर होते नहीं, करवाए जाते हैं। राजनीतिक नेता लोग अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए इस तरह के घिनौने काम करते हैं कि जनता भड़क उठे और आपस में दंगा हो जाए।

'सबसे सस्ता गोश्त' दो नेताओं की ऐसी ही घटिया योजनाओं के कार्यान्वयन को दिखाता है। दंगा कराने के लिए ये लोग पेशेवर हत्यारों, बदमाशों की खुले आम सहायता लेते हैं।

साम्प्रदायिकता की राजनीति करते हुए ये नेता हिन्दू-मुसलमान के बीच दंगे भड़काने के लिए मंदिर और मस्जिद में एक-एक पोटली फेंकवाते है जिसमें गोश्त बँधा है। ऊपर-ऊपर हिंदू-मुस्लिम एकता के गीत गाए जाते हैं और असलियत में पंडितों और मुल्लों को अपने काबू में कर उन्हीं से ये पोटलियाँ डलवाई जाती हैं। पंडितों-मुल्लों का बिकाऊ चरित्र भी दिखाया गया है।

नाटक इन नेताओं के वार्तालाप से आरंभ होता है जिसमें वह अपने इरादों और कार्यपद्धति का खुलासा करते हैं। कथावस्तु का विकास इन इरादों को कार्यरूप देने की प्रक्रिया में होता है। परिणाम यह होता है कि हिन्दू और मुसलमान दोनों गुट भड़क उठते हैं। हिन्दू समझते हैं कि मंदिर में गाय का गोश्त पड़ा है जो मुसलमानों ने डाला है और मुसलमान समझते हैं कि मस्जिद में सुअर का गोश्त हिन्दुओं ने डाला है। दोनों हथियार बंद गिरोह आपस में भिड़ने ही वाले हैं तभी एक आदमी आकर जोर से चीखते हुआ उन्हें रोकता है। वह उन दोनों गिरोहों की असलियत का खुलासा करते हुए बताता है कि तुम दोनों गिरोहों के लोग हिन्दू और मुसलमान नहीं हो असलियत में तुम दंगाई हो और दंगे के इरादे से ही घर से निकले हो।

वह आदमी दोनों गिरोहों से लड़ाई का कारण पूछता है। मंदिर-मस्जिद में फेंके गोश्त की पोटलियाँ देखकर वह खुलासा करता है कि यह गोश्त गाय अथवा सुअर का न होकर आदमी का गोश्त है

vkneh % *भाइयों ये सुअर और गाय का गोश्त नहीं है।*

HkhM+ % *है है · · क्यों नहीं है · · ·*

vkneh % *नहीं, नहीं दोस्तो मैंने दुनिया देखी है। क्या तुम समझते हो मैं गाय और सुअर के गोश्त को नहीं पहचानता · · · · देखो अगर ये सुअर का गोश्त होता तो इसमें चर्बी होती · · · देखो चर्बी कहाँ है · · · और ये गाय का गोश्त होता तो लाल होता रेशे · · · होते · · · इसमें रेशे कहाँ हैं · · · नहीं नहीं यह गाय और सुअर का गोश्त तो हो ही नहीं सकता · · · धोखा हुआ है तुम लोगों को।*

HkhM+ % *फिर ये किसका गोश्त है?*

vkneh % *सुनो · · · ये आदमी का गोश्त है।*

HkhM+ % *आदमी का गोश्त है।*

vkneh % ¼**fo'okl l**½ *हाँ आदमी का गोश्त · · · ये रंग · · · ये बे रेशे · · · ये तो आदमी का गोश्त है मेरे भाई, आदमी का · · ·*

fgUnw-eqfLye urk % *नहीं-नहीं · · · तुम झूठ बोल रहे हो।*

vkneh % *रंग और रंगत देखो · · · रेशे देखो · · · ये आदमी के गोश्त के अलावा कुछ हो ही नहीं सकता।*

dN vkokt+ % ¼**BMiu l**½ *अच्छा, आदमी का गोश्त है*

,d vkokt+ % *तब कोई बात नहीं।*

स्थिति के तनाव की चरम सीमा पर पहुँच कर जिस ठंडेपन के साथ नाटक खत्म होता है वह बिना कहे बहुत कुछ कह देता है। जब तक पोटली में सुअर या गाय का गोश्त था तब तक तो वह भयंकर लड़ाई-झगड़े, खून-खराबे का आधार था लेकिन ज्यों ही पता लगा कि यह इन्सान का गोश्त है तो किसी को कोई परवाह नहीं कि कौन आदमी था? क्यों मारा गया? क्यों उसके टुकड़े कर गोश्त निकाला गया? कैसे उसे इस तरह झूठ के साथ इस्तेमाल किया गया? संवेदनहीनता की चरमसीमा यहाँ देखने को मिलती है। चूँकि आदमी के गोश्त से किसी तरह का धार्मिक जुनून पैदाकर राजनीतिक फायदा नहीं उठाया जा सकता।

अतः वह पड़ा रहे किसी को परवाह नहीं। इतना ही नहीं नाटक का आखिरी वाक्य बदमाश का संवाद–

''चः चः आदमी का गोश्त'' एक तरह की हिकारत का भाव प्रकट करता है।

गौर करने की बात है कि आदमी के गोश्त को लेकर उन लोगों की कोई खास प्रतिक्रिया नहीं होती। नेता और भीड़ सब यह कहते हुए चले जाते हैं कि धरम बच गया। यहीं पर नुक्कड़ नाटक खत्म हो जाता है। इस तरह 'सबसे सस्ता गोश्त' नाटक सिद्ध करता है कि आदमी

का गोश्त ही ऐसा है जो किसी के काम का नहीं आता इसलिए वही सबसे सस्ता है। जब राजनीति स्वार्थ प्रेरित हो जाती है तो उसमें अनैतिकता ग्रहणीय हो जाती है और मनुष्यता के लिए कोई स्थान नहीं रहता।

गोश्त की चर्चा के बहाने यह और भी बहुत कुछ व्यंजित करता है कि यानी इसके और भी कई अर्थ निकलते हैं जिनकी चर्चा इस इकाई में आगे की जाएगी।

23-6 ik=k dk pfj=-fp=.k

नुक्कड़ नाटक होने के नाते 'सबसे सस्ता गोश्त' में थोड़े से ही पात्र हैं दो नेता, दो बदमाश और एक आदमी के अलावा भीड़ का समूह जिसकी कोई संख्या नहीं दी गई दो-चार-छह कितने भी हो सकते हैं और इससे अधिक भी। मुल्ला और पंडित बहुत, थोड़ी देर के लिए आते हैं।

पात्रों का चरित्र व्यक्ति चरित्र की बजाय वर्ग चरित्र के रूप में अंकित किया गया है जिसे मौजूदा समय में वर्ग विशेष का प्रतीक चरित्र भी कहा जा सकता है। नेता, बदमाश, भीड़ या एक समझदार ईमानदार आदमी सभी अपने-अपने वर्ग के प्रतिनिधि रूप में उँकेरे गए हैं।

i) urk ox के चरित्र का दोहरापन यहाँ चित्रित हुआ है। वे धर्म की राजनीति करते हैं। उनका अपना धर्म है धोखाधड़ी। चुनाव क्षेत्र में जिस धर्म के मानने वाले बहुमत में हो उसी के हितैषी होने का ढोंग करते हुए वे राजनीति की सफलता के लिए घटिया और गैर ईमानदार तरीके अपनाते हैं। उन्हें पता है कि जनता उनसे नफरत करती है उसके हित के लिए उन्होंने कोई काम नहीं किया है। इसलिए वह पहले चुपके से जनता पर मुसीबत ढहाने का प्रयास करते हैं फिर उसकी मदद करके वोट पाना चाहते हैं अतः धर्म के आधार पर जनता को बाँटते, लड़वाते-भिड़वाते हुए बेवकूफ बनाते हुए अपने स्वार्थ को सिद्ध करते हैं। पहले दंगा करा के फिर सहानुभूति, राहत, सांत्वना देकर अपना वोट बैंक बनाते हैं नेता खुद कहते हैं :

''नेता हैं हम जाति के
हिन्दू हैं न मुस्लिम
अरे काम हमारा लूट के खाना
हिन्दू हैं न मुस्लिम''

वह जानते हैं कि वह किसी धर्म, किसी समुदाय, किसी जाति के प्रति निष्ठावान नहीं हैं। परिणामस्वरूप यह भी जानते हैं कि हिन्दू और मुसलमान दोनों ही उनसे घृणा करते हैं। मगर अब भी उन्हें भरोसा है कि वह अपने-अपने चुनाव क्षेत्र में जाकर लोगों को बहका कर लड़वा कर वोट हासिल करने में कामयाब होंगे।

उनकी शक्ति बाहुबली अपराधी हैं जो हत्या, लूटपाट, बलात्कार में माहिर हैं। धर्म व्यवस्थापक इन भ्रष्ट नेताओं के इतने काबू में है कि जैसा वे चाहते हैं वैसा उनसे करा लेते हैं। सत्ता और अपराध का चोली दामन का संबंध इन नेताओं की कारगुजारी में दिखाई देता है। नाटक में इनके चरित्र-चित्रण के बारे में यह कहना उपयुक्त होगा कि ये निहायत चरित्रहीन नेता दिखाए गए हैं जो सत्ता पाने के लिए किसी भी तरह के जघन्य अपराध का सहारा ले सकते हैं।

ii) ,d vkneh जो भीड़ के बीच आकर इन नेताओं की साज़िश का खुलासा करता है वह जनता के उस जानकार, अनुभवी ईमानदार वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो नेताओं की काली करतूतों को अच्छी तरह जानता है और उनकी असलियत दिखाकर समाज को गुमराह होने से, आपस में लड़ने-भिड़ने से बचाता है। पोटलियों में रखे गोश्त के बहकावे में आकर लोग गाय और सुअर का गोश्त समझ लेते हैं और मरने-मारने को तैयार हो जाते हैं तभी वह आदमी उन्हें समझाता है कि गाय और सुअर का गोश्त पहचानें यानी असलियत को पहचानें –

vkneh % भाइयो ये सुअर और गाय का गोश्त नहीं है। x x x देखो अगर यह सुअर का गोश्त होता तो इसमें चर्बी होती ··· देखो चर्बी कहाँ है ··· अगर ये गाय का गोश्त होता तो लाल होता ··· रेशे होते ··· इसमें रेशे कहाँ हैं ··· नहीं नहीं ये गाय और सुअर का गोश्त तो हो ही नहीं सकता।

HkhM % फिर यह किसका गोश्त है?

vkneh % सुनो . . . ये आदमी का गोश्त है।''

यह आदमी अपने सद्प्रयास से एक बार का साम्प्रदायिक दंगा रुकवा देता है। लोग ठंडेपन से कहते हैं *''अच्छा, आदमी का गोश्त है''* और इस बात का संतोष व्यक्त करते हैं यह अच्छा हुआ कि मंदिर-मस्जिद नापाक नहीं हुए, धरम बच गया।

लेकिन समाज में भ्रष्ट धोखेबाज तत्व मौजूद हैं जो कुछ समय के लिए शांत हो गए हैं लेकिन आगे का कुछ कहा नहीं जा सकता। इस समय तो वे अपने हिन्दुत्व के रक्षकों और इस्लाम के सिपाही अनुयाइयों को वापस ले गए हैं मगर लगता है कि मौका पाते ही फिर सिर उठाएँगे।

iii) HkhM+ का चरित्र भी इस नाटक में देखने को मिलता है भीड़ विवेक से कम आवेश से ज्यादा काम लेती है। मंदिर-मस्ज़िद में गोश्त की पोटलियाँ गिरी देख भीड़ साम्प्रदायिक हिंसा पर उतारू हो जाती है। किंतु इस असलियत का खुलासा होने पर कि यह गाय अथवा सुअर का गोश्त नहीं है भीड़ का आक्रोश ठंडा पड़ जाता है।

iv) cnek'k ykxk का कोई चरित्र नहीं होता वे तो हिंसा और लूट के लिए ही जीते हैं। इस नाटक में उनका ऐसा ही घिनौना रूप बहुत संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है –

''cnek'k : पिटिर बोल कर ही काम नहीं चलेगा नेताओ . . . देश के रक्षको . . . आग तो हम ही लगाएंगें . . . गोलियां तो हम ही चलाएँगे। बच्चों की गर्दन तो हम ही काटेंगें . . औरतों की इज्ज़त तो हम ही लूटेंगे। उनकी छातियाँ तो हम ही काटेंगे . . . कभी वर्दी पहन कर कभी उतार कर हम ही आएँगे।''

ck/k i'u

1. सबसे सस्ता किसका गोश्त है और क्यों?

....

....

2. 'सबसे सस्ता गोश्त में' कुल कितने पात्र है?

....

....

vH;kl

1. नुक्कड़ नाटक से आप क्या समझते हैं, पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

2. राजनीतिकों के चरित्र को इस नाटक में किस प्रकार चित्रित किया गया है? पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

23-7 ifjos'k

'सबसे सस्ता गोश्त' नाटक का परिवेश हमारे वर्तमान के यथार्थ का परिवेश है। इसमें जो कुछ प्रस्तुत किया गया है वह हमें समाज में अक्सर होता दिखाई देता है और लम्बे समय से दिखाई देता रहा है। धार्मिक सद्भाव के, देश प्रेम के गीत हमारे यहाँ कम नहीं गाए जाते किन्तु धार्मिक बैर भी इतनी क्रूरता से फैलाया जाता है कि कथनी और करनी में ज़मीन-आसमान का अंतर

प्रकट हो उठता है। यह नुक्कड़ नाटक, साम्प्रदायिक बैर पैदा करने, लड़वाने और अमानवीय कृत्यों को अन्जाम देने के परिवेश को बहुत सीधे और कटाक्षपूर्ण ढंग से उभारता है।

सामाजिक परिवेश से ज्यादा यह राजनीति के परिवेश को सामने लाता है। राजनीति में स्वार्थी अपराधी तत्वों के प्रवेश ने पूरी की पूरी लोकतांत्रिक प्रक्रिया को एक ढोंग में बदल दिया है। परिणाम यह हुआ है कि मनुष्यता का न केवल ह्रास हुआ है बल्कि एक गैर-जिम्मेदार, शर्मनाक, मक्कार संस्कृति पनपी है जो किसी भी हालत में अपनी स्वार्थपूर्ण राजनीति सिद्ध करना चाहती है। गाय या सुअर का गोश्त लड़वा सकता है अतः उसकी राजनीतिक कीमत है आदमी के गोश्त में लड़वाने की ताकत नहीं है क्योंकि यह नहीं बताया जा सकता कि यह किस मज़हब के आदमी का गोश्त है। चूंकि यह लड़वा नहीं सकता अतः इसकी कोई कीमत नहीं। आदमी के गोश्त के नाम पर मंदिर-मस्जिद अपवित्र नहीं होते। इसलिए लेखक ने लोगों की प्रतिक्रिया बहुत विडम्बनापूर्ण ढंग से दिखाई है। ठंडेपन से वे कहते हैं–

dN vkokt: % ¼BMiu ls½ *अच्छा आदमी का गोश्त है।*
,d vkokt % *तब कोई बात नहीं।*
nl jh vkokt % *मंदिर अपवित्र नहीं हुआ।*
rhl jh vkokt % *मस्ज़िद नापाक नहीं हुई।*
pkFkh vkokt % *चलो अच्छा ही हुआ।*
ikpoh vkokt % *धरम बच गया।*
fgUnq urk % *चलो हिन्दुत्व के रक्षको, यह गाय का नहीं आदमी का गोश्त है।*
eqlyeku urk % *चलो इस्लाम के सिपाहियो, यह सुअर का नहीं आदमी का गोश्त है।*
cnek'k % *चः चः आदमी का गोश्त।*

¼lc pys tkrs gS½

यहाँ इन्सान की हत्या किसी के मन को आन्दोलित नहीं करती क्योंकि इन्सानियत से ज़्यादा जोर मज़हबी राजनीति पर है। लोगों को बेवकूफ बनाने के लिए धार्मिक स्थलों की पवित्रता की दुहाई दी जाती है और जब दंगे हो चुकते हैं तो दंगा पीड़ितों की मदद के नाम पर वोट बटोरे जाते हैं। यह सब काम भलमनसाहत से तो हो नहीं सकता इसलिए पूरे प्रपंच में गुंडे बदमाशों की अनिवार्य भूमिका हो जाती है। ऐसा प्रतीत होता है कि वे ही स्थितियों के संचालक बने हुए हैं। और जब कोई समझदार साहसी व्यक्ति इस प्रपंच का भांडा-फोड़ कर देता है तो वही बदमाश उस खुलासे पर विडम्बनापूर्ण और निरपेक्ष ढंग से कहता है–

'चः चः आदमी का गोश्त' मानो वह सबसे निकृष्ट हो।

इस तरह 'सबसे सस्ता गोश्त' नाटक का परिवेश हमारे समाज में व्याप्त घटिया और निहित स्वार्थों की राजनीति के कुचक्रों के वातावरण को उद्‌घाटित करता है जिसमें मानवीय गरिमा और सौहार्द का हनन हुआ है। यह परिवेश समसामयिक समाज के यथार्थ को अपने नग्न रूप में उजागर करता है।

23-8 lajpuk-f'kYi

संरचना शिल्प के अंतर्गत हम इसे नुक्कड़ नाटक की भाषा, गीत, शैली और संवाद का विश्लेषण करेंगे। नुक्कड़ नाटकों के संदर्भों में इसका विशेष महत्त्व है।

Hkk"kk

'सबसे सस्ता गोश्त' के कथानक, पात्रों के चरित्र-चित्रण और परिवेश की चर्चा करते हुए हम देख चुके हैं कि यह नाटक आज के सामाजिक-राजनीतिक यथार्थ पर व्यंग्य करता है। इस यथार्थ को तीखी चुभने वाली भाषा के माध्यम से उभारा गया है। बोलचाल की शब्दावली का इस्तेमाल राजनीतिक चाल से जनता को बेवकूफ बनाने के लिए किया गया है। आपस में बातचीत करते हुए नेता कहते हैं कि हिन्दुओं और मुसलमानों को एक दूसरे के खिलाफ भड़का कर वे पहले दंगे कराएँगे फिर लोगों में राहत सामग्री बाँट कर और अपराधियों की जमानत करा के अपने को उनका हितैषी सिद्ध करेंगे।

नुक्कड़ नाटक चूँकि रास्ता चलते व्यक्ति का ध्यान आकृष्ट करने के लिए होता है अतः इसकी भाषा सहज बोधगम्य, रोचक और सम्प्रेषणीय होना आवश्यक है। इसमें निहित व्यंग्य देखने वाले को तुरंत समझ आना चाहिए। इस दृष्टि से 'सबसे सस्ता गोश्त' में बोल-चाल की शब्दावली का इस्तेमाल किया गया है। मुहावरों का भरपूर इस्तेमाल करते हुए भाषा को रवानीदार और संप्रेषणीय बनाने का प्रयास किया गया है उदाहरण के लिए 'पाँचों उंगलियाँ घी में होना', 'साख गिरना', 'आँखें होना', 'दुनिया देखना', 'दाहिना हाथ होना' आदि। चुनावों में जीत के इच्छुक लालची नेताओं की स्वार्थपरता उनके हर शब्द में झलकती है। वे जानते हैं कि जनता उनसे घृणा करती है क्योंकि वे चुनाव के दौरान किए गए अपने वादों को पूरा नहीं करते। उनकी भाषा में उनकी धूर्तता भली-भाँति प्रकट होती है। बड़े विश्वास के साथ वह कहते हैं :

nkuk feydj % ''हम नफरत को प्यार में बदलना जानते हैं··· हम उनसे कहेंगे···

efLye urk % बिरादराने इस्लाम हिन्दुओं ने तुम्हें बर्बाद कर दिया। तुम्हारे घर उजाड़ दिए। तुम्हें जिन्दा जला दिया··· लेकिन घबराने की क्या बात है मैं तुम्हारे साथ हूँ··· मैं···

fgUn urk % आर्यावर्त के सुपुत्रो! इन मलेच्छ मुसलामानों ने भारत माता के टुकड़े कर डाले। इन्हें क्या अधिकार है यहाँ रहने का। इन्होंने तुम्हारी औरतों की इज्ज़त लूटी है। बच्चों के गले काटे हैं··· आओ हम मिलजुल कर आगे बढ़ें··· मैं तुम्हारे साथ हूँ, तुम्हारा सेवक··· हाथ जोड़ता है।

efLye urk % मैं लोगों का दिल जीत लूँगा। जब उन्हें कर्फ्यू पास दिलाऊँगा···

fgUn urk % राहत सामग्री बाटूँगा।

efLye urk % जमानतें कराऊँगा।

fgUn urk % मंदिर बनवाने के लिए चंदा जमा करूँगा।

efLye urk % मस्जिद की मरम्मत कराऊँगा।

यहाँ समकालीन जिंदगी की असलियत को थोड़े शब्दों में सारगार्भित ढंग से उभारने वाली भाषा में प्रस्तुत किया गया है। किन्तु यह मनोरंजन करने वाली भाषा न होकर यथार्थ का पर्दाफाश करने वाली, चुभने वाली भाषा है –

fgUn-efLye urk

nkuk ,d lkFk % दोनों खड़े हो जाओ। जैसा कहा जाय करो ···पाँचों उँगलियाँ घी में होंगी, सिर कढ़ाई में होगा। टाँगें चूल्हे में होंगी।

(मुल्ला-पंडित खड़े होकर ताली बजाते हैं और नाचने लगते हैं।)

ep ij nk cnek'k vkrs g vkj vkr gh Bgkd yxku yxr gA

cnek'k % पिटिर बोलकर ही काम न चलेगा नेताओ··· देश के रक्षकों ···आग तो हम ही लगाएँगे ···गोलियाँ तो हम ही चलाएँगे । बच्चों की गर्दन तो हम ही काटेंगे ···औरतों की इज्जत तो हम ही लूटेंगे। उनकी छातियाँ तो हम ही काटेंगे ···कभी वर्दी पहन कर कभी उतार कर हम ही आएँगे।''

दिल दहलाने वाली असलियत को उजागर करती यह भाषा राजनीतिक तंत्र की अमानवीय करतूतों को सामने लाती है। यह दिखाती है कि ऊपर से दिखने वाले लोकहित के कार्यों की वास्तविकता क्या है। अपराध जगत और राजनीतिक नेतृत्व की कैसी जबरदस्त साँठ-गाँठ है और सत्ता वास्तव में इस अपराधी तंत्र के ही हाथ में है। पंडित-मुल्ला नेता सब मानो उसी के हाथ के खिलौने हैं। बड़ी तादाद ऐसे ही लोगों की है। इनके कारनामों का पर्दाफाश करके बेबाक सच्चाई को उजागर करने वाले लोग भी हैं। हालाँकि उनकी तादाद कम है किंतु चूँकि वे सच की ठोस जमीन पर खड़े हैं इसलिए कारगर होते हैं।

इस नुक्कड़ नाटक में एक अकेला आदमी आकर झगड़े पर उतारू भीड़ के सामने सिद्ध कर देता है कि लोग लड़ने का फैसला करके घर से निकले हैं अन्यथा ध्यान से देखने पर वे समझ जाते कि यह गाय या सुअर का मांस न होकर आदमी का मांस है। इस जिम्मेदार लोक हितैषी व्यक्ति की भाषा में आत्मविश्वास है सच को देखने का, व्यक्त करने का पैनापन है–

vkneh % भाइयो, यह सुअर और गाय का गोश्त नहीं है

x x x x x

HkhM % *फिर ये किसका गोश्त है?*
vkneh % *सुनो ये आदमी का गोश्त है।*
HkhM % *आदमी का गोश्त ?*
vkneh % *(विश्वास से) हाँ आदमी का गोश्त ···ये रंग ···ये बे रेशे ···ये तो आदमी का गोश्त है मेरे भाई आदमी का ···''*

xhr

नुक्कड़ नाटक की एक विशेषता गीतों का समावेश होता है। गीतों को युक्ति के रूप में इस्तेमाल करते हुए उनके माध्यम से संदेश पहुँचाया जाता है। 'सबसे सस्ता गोश्त' में भी इस युक्ति का उपयोग किया गया है– नाटक के आरम्भ में तथा मध्य में। आरम्भ में एक गायक नाटक के विषय-वस्तु का संकेत गीत के माध्यम से देता है स्वर के बदलाव से व्यंग्य का संकेत देता हुआ मानो पूरी स्थिति पर टिप्पणी करता है।

कई बार इनमें लोक प्रचलित गानों, कहावतों की नकल करते हुए व्यंग्य को उभारा गया है जिसके लिए उनके शब्द और अर्थ दोनों बदले हुए रूप में प्रस्तुत किए गए हैं जैसे आरंभिक गीत में राजनीति करने की नीयत शब्दों को बदलकर व्यंजित की गई है। 'आपस में हैं भाई-भाई' की जगह कहा गया है ''नहीं है कोई भाई-भाई''।

xk;d % हिन्दू–मुस्लिम–सिख–ईसाई
नहीं है कोई भाई-भाई
करते हैं सब मिलके लड़ाई,
मारा-पीटा आग लगाई
जब देखो तब आफत आई
रोज़ लड़ाई, रोज़ लड़ाई।

उसके बाद दोनों नेता नाचते-गाते अपने धूर्ततापूर्ण इरादों का संकेत देते हैं। *''नेता है हम जात के हिन्दू है न मुस्लिम, काम हमारा लूट के खाना* नाटक के माध्यम से गीत का इस्तेमाल समूह गान के रूप में व्यंजनाश्रित हुआ है। गायन के माध्यम से घटना-व्यापार की सूचना देने के साथ-साथ पात्रों की मनोभूमि का भी खुलासा किया गया है ये गीत रोचक और सम्प्रेषणीय भाषा में हैं।

इसके विपरीत मंदिर मस्जिद में गोश्त फिकवा कर दंगा कराने से पहले दोनों नेता पंडित-मुल्ला और बदमाश मिलकर यह सौहार्दपूर्ण गीत गाते हैं –

सारे जहाँ से अच्छा
हिंदोस्तां हमारा
हम बुलबुलें हैं इसकी
ये गुलिस्ताँ हमारा
मज़हब नहीं सिखाता
आपस में बैर रखना
हिन्दी हैं हम वतन है
हिन्दोस्तां हमारा।

सुप्रसिद्ध शायर मुहम्मद इकबाल के इस गीत का इस्तेमाल व्यंग्य की सृष्टि के लिए किया गया है। आपस में भाई चारे की, देशभक्ति की भावना का यह गीत यहाँ उन लोगों के मुँह से गवाया गया है जो भाई चारे को हर तरह से नष्ट कर रहे हैं। कथनी-करनी का विरोधाभास इसके माध्यम से बहुत सफलता से उभरा है।

'kSyh

'सबसे सस्ता गोश्त' का वाचन करते हुए आपने महसूस किया होगा कि इस नाटक में हमारे समाज की बहुत गम्भीर वास्तविक समस्या को उठाया गया है, लेकिन भारी-भरकम शैली में नहीं; सीधी-स्पष्ट किंतु व्यंग्यात्मक शैली में। असलियत को बताया गया है किंतु सपाट विवरण के रूप में नहीं। कटु सत्यों को उजागर करने वाले तीखे वार्तालाप हैं और हास्यास्पद किंतु लज्जाजनक व्यवहार के माध्यम से व्यंग्य-विडम्बना को उभारने के लिए नेताओं की बातचीत

काफी घृणास्पद शैली में रखी गई है। वे जानते हैं कि उन्होंने जनता के लिए कोई काम नहीं किया है। अब चुनाव सिर पर आ गए हैं तो कोई चाल चलकर वोट तो फिर से पाना होगा। इसके लिए वह बदमाशों से सरेआम साँठ-गाँठ करते हैं —

fgUnw usrk ¼ आओ बहादुरों तुम तो मेरा दाहिना हाथ हो . . .
eqfLye usrk ¼ तुम तो मेरी आँख हो।

मुल्ला और पंडित से मस्जिद-मंदिर में गोश्त फिकवाते हैं और जब खुलासा हो जाता है कि यह गाय या सुअर का नहीं आदमी का गोश्त है तो वे बहुत आराम से हिन्दुत्व और इस्लाम के रक्षकों से वापस जाने के लिए कह देते हैं।

व्यंग्य इस बात में निहित है कि घृणित कार्य कराने में उन्हें कोई संकोच नहीं होता और उसका खुलासा उनको किसी तरह से लज्जित नहीं करता।

इस नुक्कड़ नाटक की नितांत बातचीत की शैली राजनीति की धूर्तता को बड़े ही प्रभावपूर्ण ढंग से उभारती है और देखने वालों को आगाह करती है कि तुम्हें किस तरह बेवकूफ बनाया जा रहा है। यह भी स्पष्ट करती है कि मौजूदा सामाजिक-राजनीतिक गतिविधियों में मनुष्यता खो गई है मनुष्य की जान की, उसके सम्मान की, उसकी सुख-सुविधा की न कोई कीमत है न किसी को परवाह क्योंकि उसके रक्त-मांस से वोट नहीं बटोरे जा सकते। गाय और सुअर का मांस डलवा कर वोट दिलवाने में मदद कर सकता है इसलिए उसकी कीमत है।

laokn

नुक्कड़ नाटक के स्वरूप के अनुकूल 'सबसे सस्ता गोश्त' के संवाद छोटे-छोटे हैं। नेताओं के संवाद उनकी स्वार्थपरता, छल-प्रपंच, बदमाशों के संवाद उनकी रक्तरंजित गुंडागर्दी, को उभारते हैं राजनीतिज्ञों से साँठ-गाँठ कर उनके इशारों पर नाचते लालची धर्मकर्मियों (पंडित-मुल्ला) के संवाद उनके आचरण और स्वभाव के अनुकूल है। संवादों का लहजा बोलचाल का है और कथ्य घृणित सामाजिक यथार्थ का। वे अर्थ की गहराई तक संप्रेषित होकर दर्शक को प्रभावित करते हैं।

उनका भंडाफोड़ करने वाले समझदार आदमी के संवादों में आत्मविश्वास और ईमानदारी झलकती हैं। ठोस तर्कों से वह इनकी साजिश को नाकाम कर देता है।

23-9 vfHkus;rk

अभिनेयता की दृष्टि से 'सबसे सस्ता गोश्त' पर बातचीत करने पर हम पाते हैं कि नुक्कड़ नाट्य शैली की दृष्टि से यह सफलतापूर्वक अभिनेय नाटक है। इसमें पात्रों की संख्या ज्यादा नहीं है, कथानक का विस्तार नहीं है। गली-मोहल्ले के नुक्कड़ पर प्रस्तुति के उपयुक्त सादगी इसकी संरचना में मौजूद है। पात्रों का आवागमन उनका वार्तालाप और गतिविधियों को अभिनेता थोड़े से प्रयास और अभिनय कौशल से प्रभावी ढंग से मंच पर उतार सकते हैं।

संवादों में नाटकीय व्यंग्य (dramatic irony) का भी इस्तेमाल हुआ है। नाटकीय व्यंग्य वह स्थिति होती है जब मंच से बोलने वाले पात्रों की बात का आशय पास खड़े अन्य पात्रों को नहीं समझ आता किन्तु दर्शकों को भली-भाँति समझ आ जाता है। जब हिन्दू-मुस्लिम दोनों नेता पंडित और मौलवी से एक साथ कहते हैं।

> *''दोनों खड़े हो जाओ। जैसा कहा जाये करो . . . पाँचों उँगलियाँ घी में होगी, सिर कढ़ाई में होगा, टाँगें चूल्हे में होंगी''*

तब मुल्ला और पंडित तो अपने स्वार्थवश नेताओं के इतने काबू में हैं कि उनकी मानने में ही अपनी भलाई समझते हैं किंतु दर्शकों को यह अच्छी तरह समझ में आ जाता है कि साजिश करने वालों की करतूत में शामिल व्यक्तियों को कठिनाई या मुसीबत का सामना भी करना पड़ सकता है।

परिस्थिति को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए नाट्य लेखक ने समुचित रंग-निर्देश दिए हैं। मुख्यतः आंगिक-वाचिक अभिनय के रंग-निर्देश हैं संदर्भ के अनुकूल स्वर और लहजे के उतार-चढ़ाव के रंग-निर्देश भी दिए गए हैं।

गीत नुक्कड़ नाटक की एक प्रभावपूर्ण युक्ति है। जिसका इस्तेमाल इस नाटक में स्थिति परिस्थिति का सीधे-सीधे बयान करने वाले गीतों के माध्यम से भी किया गया है और विरोधाभास की स्थिति दिखाने वाले गीतों के माध्यम से भी।

23-10 eY;kdu

मूल्याकंन के अंतर्गत हम नुक्कड़ नाटक 'सबसे सस्ता गोश्त' के प्रतिपाद्य पर विचार करेंगे। साथ ही नुक्कड़ नाटक के शीर्षक की उपयुक्तता पर भी विचार करेंगे।

ifrik|

'सबसे सस्ता गोश्त' को पढ़कर यह तो स्पष्ट हो जाता है कि यह व्यंग्यपरक नाटक है। प्रश्न यह है कि यह व्यंग्य किस पर है नेताओं पर, जनता पर, धर्मगुरुओं पर, बदमाशों पर या इन सब पर। समाज के कई तबकों की असलियत को दिखाता हुआ यह नाटक जनता में यह जागरूकता पैदा करने का प्रयास हैं कि वह अपने नेताओं, धर्मगुरुओं को पहचाने, भीड़ में शरीक शरारती तत्वों को पहचाने, उनकी करतूतों को समझे, उनके बहकावे में न आए; अन्यथा साम्प्रदायिक दंगों की लपेट में उन्हें अपना तन-मन-धन सब कुछ खोना पड़ सकता है। राजनीति एक सौदागारी हो गई है जिसमें मुनाफा कमाने के लिए कुछ भी किया जा सकता है। इन सौदागारों से बचने और सही आदमी की सलाह मानने की अप्रत्यक्ष ढंग से प्रेरणा देता है। जो कुछ यहाँ शब्दों के माध्यम से कहा गया है उससे अधिक दर्शक/पाठक को अपनी समझ से महसूस कराने का उद्देश्य इसमें निहित है। नेताओं का धर्मगुरुओं और बदमाशों से मिलकर सामाजिक सौहार्द तोड़ने-फोड़ने के प्रयास को उजागर करके नाटक यह संदेश देता है कि ऐसे शरारती तत्वों को पहचानने और विफल करने की जरूरत है। भीड़ में आया एक आदमी अनुभवी है और अपने सही कृत्य के प्रति आत्मविश्वासपूर्ण है उससे सभी को प्रेरणा लेने की जरूरत है। लोगों के कृत्य के पीछे छिपी असलियत को देखने-पहचानने की समझ विकसित करने और सच कहने का हौसला रखने की जरूरत है। ऐसा किए बिना मौजूदा साजिशपूर्ण राजनीति को समाप्त नहीं किया जा सकता।

'kh"kZd

प्रस्तुत नाटक का शीर्षक सार्थक और व्यंग्यात्मक है। आदमी का गोश्त सबसे सस्ता है। आदमी का गोश्त राजनीति फायदे उठाने में, लड़ाई-दंगा कराने में काम नहीं आता इसलिए उसकी कोई कीमत नहीं है।

नाटक का सम्पूर्ण कथ्य इस बात पर बल देता है कि स्वार्थों की राजनीति के चलते मानवीय जीवन मूल्यों का ह्रास हो गया है। आदमी जाति की कोई कीमत नहीं रही है क्योंकि समाज संवेदनहीनता की ओर बढ़ रहा है। मनुष्य दूसरे मनुष्यों की परवाह किए बगैर केवल अपने लाभ की सोच रहा है इसमें न उसका हित है न समाज का। नाटक का शीर्षक इस संदेश को व्यंग्यात्मक ढंग से बहुत अच्छी तरह संप्रेषित करता है।

cks/k iz'u

3. इस नुक्कड़ नाटक में 'सारे जहां से अच्छा....' नज़्म का प्रयोग हुआ है। इसके लेखन कौन हैं?

.....

.....

4. निम्नलिखित वाक्यों में सही शब्दों द्वारा रिक्त स्थान को भरिए :

क) हिंदू के लिए ..... पवित्र है। (गाय/सुअर)

ख) मुसलमान के लिए ..... पाक है। (गाय/सुअर)

vH;kl

3. 'सबसे सस्ता गोश्त' में चित्रित परिवेश का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

4. इस नाटक की भाषागत विशेषताएँ बताइए।

....

....

....

5. नुक्कड़ नाटक में गीतों में इस्तेमाल से लेखक ने क्या प्रयोजन सिद्ध किया है?

....

....

....

6. 'सबसे सस्ता गोश्त' के प्रतिपाद्य पर पाँच पंक्तियाँ लिखिए।

....

....

....

....

23-11 lkjk'k

प्रस्तुत इकाई में आपने असगर वज़ाहत द्वारा लिखे नुक्कड़ नाटक ''सबसे सस्ता गोश्त'' का वाचन और विश्लेषण किया। आपने यह भी पढ़ा कि नुक्कड़ नाटक की क्या विशेषताएँ होती हैं तथा यह नाटक नुक्कड़ नाटक की दृष्टि से कैसा है।

आपने इस नाटक में निहित सामाजिक संदेश की जानकारी भी प्राप्त की। अब आप बता सकते हैं कि इस नाटक का प्रतिपाद्य क्या है, इसका कथानक कैसा है। इसके पात्रों के चरित्र को किस तरह विकसित किया गया है। इसका संरचना-शिल्प कैसा है।

इस इकाई में आपसे संदर्भ सहित व्याख्या नहीं कराई गई है क्योंकि यह नाटक कटु यथार्थ को बहुत सीधी भाषा में व्यक्त करता है। इसमें प्रस्तुत यथार्थ सहज ग्राह्य है उसकी व्याख्या अपेक्षित नहीं है।

23-12 'kCnkoyh

LVt ikiVh % नाट्य प्रस्तुति मंच पर इस्तेमाल किया जाने वाला कोई भी सामान

ckgcyh % ऐसा शक्तिशाली व्यक्ति जो अपनी ताकत का इस्तेमाल समाज-विरोधी कार्यों में करें

iip % धोखापूर्ण कृत्य

ekfgj % कुशल

23-13 ck/k i'uk@vH;kl k d mŸkj

ck/k i'u

1. सबसे सस्ता गोश्त मनुष्य का है क्योंकि उसका सांप्रदायिक वैमनस्य फैलाने में कोई भूमिका नहीं है।
2. कुल छह पात्र हैं।
3. मुहम्मद इकबाल।
4. क) गाय, ख) सुअर

vH;kl

1. देखें 23.2,
2. देखें 23.4,
3. देखें 23.7,
4. देखें 23.8
5. देखें 23.8
6. देखें 23.10